दुर्लभ ब्लड ग्रुप 'जर्बिच' वाले मरीज की हार्ट सर्जरी सफल

टेबल टेनिस के बॉल के आकार का निकाला गया ट्यूमर, मुंबई में 50 वर्षीय मरीज को मिला नया जीवन

Suraj.Pandey@timesgroup.com

■ **मुंबई:** डॉक्टरों ने तीन चुनौतियों को पार कर एक बेहद जटिल हार्ट सर्जरी को अंजाम दिया है। 50 वर्षीय मरीज के दिल से टेबल टेनिस के बॉल के आकार का ट्यूमर निकाला गया है। इसके साथ ही सेप्टम रिकंस्ट्रक्ट किया गया और मरीज की बाईपास सर्जरी भी की गई। सबसे बड़ी चुनौती मरीज का सबसे दुर्लभ 'जर्बिच' ब्लड ग्रुप सिस्टम था। डॉक्टरों के अनुसार, देश में किसी का यह दुर्लभ ग्रुप सिस्टम नहीं है। दावा यह भी किया गया है कि यह देश का पहला केस है।

डॉ. पवन कुमार, मरीज अग्रवाल और डॉ. माही मेहता

यवतमाल के निवासी 50 वर्षीय राजेश अग्रवाल एक सरकारी नौकरी करते हैं। रुटीन चेकअप के दौरान उनके दिल में एक गांठ की पुष्टि हुई। यवतमाल के डॉक्टर ने मायक्सोमा ट्यूमर होने की पुष्टि की। मरीज उपचार के लिए लीलावती अस्पताल पहुंचा। अस्पताल के कार्डियो वैस्कुलर एंड थोरेसिक सर्जन डॉ. पवन कुमार ने बताया कि मेरे 30 साल के करियर में मैंने 70 मायक्सोमा ट्यूमर के सर्जरी को अंजाम दिया है, लेकिन यह केस काफी जटिल था। मरीज के ट्यूमर का साइज पिंग पोंग बॉल के आकार का था। मरीज के तीनों धमनियों में ब्लॉकेज भी थी। ट्यूमर के कारण दो एट्रियम को विभाजित करने वाली सेप्टम भी खराब हो गया था। तो हमें उसे आर्टिफिशियल सेप्टम भी रिकंस्ट्रक्ट करना था। इन सब चुनौतियों के अलावा सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि जब सर्जरी के पहले मरीज का ब्लड ग्रुप मैच करने के लिए भेजा गया, तो किसी से मैच ही नहीं हो रहा था। हमने शहर के 4 बड़े अस्पतालों में सैंपल भेजा, लेकिन ब्लड ग्रुप मैच ही नहीं हो रहा था।

इस ब्लड ग्रुप के विश्व में बहुत कम लोग

आखिरकार इंटरनेशनल ब्लड ग्रुप रेफरेंस लेबोरेटरी यूके में भेजी गई। वहां जांच में पता चला कि मरीज का 'जर्बिच फिनोटाइप' ब्लड ग्रुप है। इस ब्लड ग्रुप के विश्व में केवल 8 लोग पंजीकृत हैं और 9 वां खुद मरीज है। इन सब अड़चनों को पार कर 18 अक्टूबर को मरीज की सर्जरी की गई। यह सर्जरी 5 घंटे चली और सफल हुई। शुक्रवार को मरीज अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया।

मरीज के निकाले रक्त का इस्तेमाल

ऐसी जटिल सर्जरी में 3 से 4 यूनिट ब्लड लगता है। ब्लड किसी से मैच नहीं कर रहा था, ऐसे में तीन बार ब्लड निकाला गया। इसमें हार्ट अटैक का जोखिम था, लेकिन डॉक्टरों ने सावधानी से यह सब किया। सर्जरी में मरीज के निकाले हुए रक्त का ही इस्तेमाल किया गया। इस प्रक्रिया को ऑटोलॉगस ट्रांसफ्यूजन कहते हैं।

हमें सोशल मीडिया से डॉक्टर के बारे जानकारी मिली और हम लीलावती आए। एक के बाद एक दिक्कत आ रही थी। यह शॉकिंग था। लेकिन अस्पताल के डॉक्टरों ने सभी चुनौतियों को पार कर मेरे पिता को नई जिंदगी दी है।

—नमन अग्रवाल, मरीज का बेटा